UGC Approved Journal No - 40957
ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

An Interdisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

जिज्ञासा

Chief Editor :
Indukant Dixit

Executive Editor :
Shashi Bhushan Poddar

Editor :
Reeta Yadav

6 Apr, 2023 (11)

UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 6.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 16 June 2023 No. II

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

- **स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का व्यक्तित्व शीलगुणों पर पड़ने वाले प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन** 216-227
  उमेश कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र, महाराज बलवंत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गगापुर, वाराणसी
  प्रो. एस.पी. सिंह 'वत्स', प्राचार्य, आचार्य नरेंद्र देव टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, सीतापुर कॅलेज, सीतापुर
- **उच्च प्राथमिक स्तर के नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता तथा शैक्षिक उपलब्धि पर कोविड-19 के प्रभाव का अध्ययन** 228-239
  श्वेता सिंह, शोधार्थी, डॉ.राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उ.प्र.
  प्रो. शिवम श्रीवास्तव, प्रोफेसर, शोध-पर्यवेक्षक, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बहराइच, उ.प्र.
- **कोरोना महामारी कालखण्ड के पूर्व तथा पश्चात् भारत में प्राथमिक विद्यालयों में आनलाइन शिक्षा की स्थिति** 240-245
  अभिषेक सिंह, शोध छात्र, (शिक्षाशास्त्र), एम.एल.के.पी.जी. कालेज, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश
  प्रो. श्रीप्रकाश मिश्र, प्रोफेसर (बीएड विभाग), एम.एल.के.पी.जी. कालेज, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश
- **भारत में जातियों का उदय और वर्तमान राजनीति में उसका प्रभाव (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)** 246-251
  डॉ. गिरीश कुमार दूबे, व्यूरो चीफ, ए.एन.आई., वाराणसी
- **वेदान्त दर्शन की ज्ञान मीमांसा का समीक्षात्मक अनुशीलन** 252-258
  प्रमोद कुमार, असि. प्रोफे., (संस्कृत), सी.जी.एन. (पी.जी.) कॉलेज, गोला गोकर्णनाथ - खीरी।
- **स्वतंत्रता संग्राम में बिहार की पत्रकारिता का योगदान :** 259-262
  डॉ. निशिकान्त कुमार, अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग, गंगा देवी महिला महाविद्यालय, पटना २०
- **भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में लोकनायक जयप्रकाश नारायण का योगदान** 263-270
  डॉ. संजय शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, सहकारी पी. जी. कालेज, मिहरावां, जौनपुर (उ.प्र.)

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में लोकनायक जयप्रकाश नारायण का योगदान

डॉ. संजय शर्मा*

जयप्रकाश नारायण (1902–1979) भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के 'करो या मरो' काल के नायक एवं सर्वोदयी समाजवादी, लोकतांत्रिक भारत के लोकनायक हैं।[1] लोकनायक ने अपना सम्पूर्ण जीवन देश सेवा, किसान व मजदूर सेवा को समर्पित कर दिया। लोकनायक ने अपने विचार और व्यवहार से समाज सुधारकों, किसान, मजदूर, विद्यार्थियों और राजनीतिज्ञों को प्रभावित किया। आलोचकों का कहना है कि उनके विचारों और ध्येयों में एकरूपता नहीं है। उनकी विचारधारा में तीव्रता से बदलाव दिखता है कभी वे मार्क्सवादी तो कभी समाजवादी तो कभी गाँधीवाद से प्रभावित हैं, यह बात सच है। ये विचार उनके आन्दोलन के प्रेरणा स्रोत हैं। यह बात भी सच है कि जब भी उन्हें महसूस हुआ कि विचारधारा 'न्याय व सत्य' की कसौटी पर खरी नहीं उतर रही है तभी उन्होंने उसको त्यज भी दिया। सुधांशु रंजन अपनी किताब 'जयप्रकाश नारायण' में लिखते हैं, 'जयप्रकाश के अपने कुछ आदर्श थे और उन आदर्शों की प्राप्ति के लिए उनकी रणनीति में बदलाव आता रहा। जिस कारण उनकी विचारधारा में परिवर्तन दिखाई देता है। उनका आदर्श था– सत्य को जानना और अन्याय, असमानता और शोषण पर टिकी व्यवस्था को समाप्त कर समता पर आधारित शोषण मुक्त समाज की रचना करना जहाँ वास्तविक शक्ति आम लोगों में निहित हो।[2] जयप्रकाश नारायण विचारधाराई स्तर पर चाहे जिन विचारों से प्रेरणा पाते रहे, लक्ष्य उनका देश की आजादी रही। इस लक्ष्य प्राप्ति में उनके मार्गदर्शक गाँधी जी रहे। गांधी जी से ही प्रभावित होकर उन्होंने देश को आजाद कराने का बीड़ा उठाया। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वे 'कर्म' तथा 'विचार' से सदैव तत्पर रहे। कांग्रेस सोशलिस्ट (26 दिसम्बर, 1936) में वे लिखते हैं, 'पहले स्वतंत्रता फिर दूसरा कुछ! दूर के सवाल अभी खड़े मत करो। अभी का काम पूरा करने में अपनी ताकत लगाओ, पहला काम पहले।[3] शोध पत्र में 'भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के योगदान' का अध्ययन किया गया है। शोध पद्धति ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक व वैज्ञानिक है। शोध पत्र में द्वितीय स्रोत प्रयोग में लाए गए हैं।

शोध पत्र लेखन से पूर्व शोधार्थी ने कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का अध्ययन कर उसकी समीक्षा की, वे हैं– के.के. दत्त, 'बिहार में स्वतंत्रतता आन्दोलन का इतिहास' (1999), सुधांशु रंजन, 'जयप्रकाश नारायण' (2000),

---

* असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, सहकारी पी.जी. कालेज, मिहरावां, जौनपुर (उ.प्र.)

मुनीश्वर राय 'मुनीश' 'बज्जिकांचल का स्वतंत्रता संग्राम' (2005), बेतई आन्द्रे, 'कान्सटीट्यूशनल मोरेलिटी' (2008), एम. जी. देवसहायम् 'वी मस्ट रिटर्न टू जे.पी. आइडियल्स' (2008), रणवीर समद्दर, 'जयप्रकाश नारायण एंड द प्रॉब्लम् ऑफ रिप्रजेन्टेटिव डेमोक्रेसी' (2008), बी.एम. शर्मा व अन्य, 'भारतीय राजनीतिक विचारक' (2017), सुनील कुमार, 'भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में जयप्रकाश नारायण की भूमिका : एक मूल्यांकन' (2020)। शोधार्थी इन अध्ययनों की रिक्तता को भरेगा और इन्हीं अध्ययनों को सहायता से अपने शोध को गति देगा।

जननायक, मानवतावादी, शालीन छवि व मर्यादित जीवन जीने वाले जे.पी. का जन्म 11 अक्टूबर, 1902 को बिहार के छपरा जिले के सिदाबदियारा गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम हरसूदयाल, माता का नाम फूलारानी देवी था। जे.पी. बाल्यावस्था में ही स्वतंत्रता सेनानियों के सम्पर्क में आ गये थे। इस बात की जानकारी भारत सरकार के गृहसचिव के 1938 में लिखे उस पत्र से होती है जो उन्होंने बिहार के न्यायिक सचिव को लिखा था। अजीत भट्टाचार्य ने भी अपनी किताब 'जयप्रकाश नारायण ए पोलिटिकल बॉयोग्राफी' (1971) में उसी घटना का उल्लेख किया है। वे बताते हैं, 'जयप्रकाश जब स्कूल में पढ़ते थे तथा बहुत छोटे थे तभी उनका एक सहपाठी छोटन सिंह ने उनका परिचय बंगाल के एक नौजवान क्रान्तिकारी से कराया था। वे गंगा किनारे एक गुप्त सुनसान जगह में मिले थे। उस क्रान्तिकारी ने जयप्रकाश को बंगाल के क्रान्तिकारियों के क्रियाकलापों से अवगत कराया था तथा कुछ पर्चे तथा ब्रिटिश हुकूमत द्वारा जब्त एक किताब 'देश की बात' जिसमें अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के शोषण पर प्रकाश डाला गया था पढ़ने को दिया, जयप्रकाश ने उस किताब को घर पर पढ़ा तथा युवकों के क्रांति के प्रवेशोत्सव से काफी प्रभावित हुए जिसमें जलती मोमबत्ती के ऊपर नवांगतुक की एक ऊंगली रख दी जाती थी तथा वह बिना चू किए सब कुछ बर्दास्त करता था। वह क्रान्तिकारी जयप्रकाश से अनेक बार मिला परन्तु एक दिन वह अदृश्य हो गया, उसके तुरंत बाद छोटन सिंह गिरफ्तार कर लिए गए। कई वर्षों बाद छोटन सिंह ने बताया कि किस तरह पुलिस उनका हाथ पाँव बाधकर थाने ले गयी थी परन्तु इन सब बातों का जयप्रकाश नारायण ने अपनी पढ़ाई पर कोई असर पड़ने नहीं दिया।'[4] आरंभिक शिक्षा गाँव में ग्रहण करने के उपरान्त आगे की शिक्षा ग्रहण करने के लिए जे.पी. पटना आ गए। जे.पी. पटना कालेज में अध्ययन कर रहे थे उसी समय गांधी का असहयोग आन्दोलन (1921) शुरू हो गया। 1921 में उनके अध्ययन में बाधा आई, जब मौलाना आजाद के आह्वान पर उन्होने पढ़ाई छोड़ने का मानस बना लिया और गांधी द्वारा संचालित राष्ट्रवादी आन्दोलनों में शामिल हो गए।'[5] पटना में कलाम ने विधार्थी, नौजवानों को संबोधित करते हुए कहा था, "नौजवानों अंग्रेजी शिक्षा का त्याग करो और ऐसे हिन्दुस्तान का निर्माण करो जो सारे आलम में खुशबू

पैदा करे।" गांधी जी ने भी युवाओं और विधार्थियों से, असहयोग आन्दोलन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने को कहा। जे.पी. ने पढ़ाई छोड़ देश की आजादी को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। जे.पी. लिखते हैं, 'कालान्तर में उस स्वतन्त्रता ने मात्र स्वदेश की स्वतंत्रता से आगे बढ़कर, प्रत्येक देश में प्रत्येक बंधन से मानव मुक्ति की भावना को आत्मसात किया–और सर्वोपरि मानव व्यक्तित्व की स्वतंत्रतता मन की तथा आत्मा की स्वतंत्रता का अर्थ ग्रहण कर लिया। यह स्वतंत्रतता मेरे जीवन की वासना बन गयी है और कभी भी उसका सौदा रोटी के लिए या किसी अन्य वस्तु के लिए नहीं होने दूँगा।'[6] जे.पी. के पढ़ाई छोड़ने के निर्णय से उनके पिता अत्यन्त दुखी हुए और उनको वैवाहिक बंधन में बांधने का निर्णय ले लिया। सन् 1922 में उनकी शादी चम्पारण आन्दोलन में गांधी जी के सहयोगी रहे ब्रजकिशोर प्रसाद की पुत्री प्रभावती से हुई। विवाह उपरान्त पुनः उनको अध्ययन के लिए विदेश भेज दिया गया। अपने अध्ययन को पूरा कर 1929 में वे पुनः भारत आ गए। अजीत भट्टाचार्य लिखते हैं, "विदेशी डिग्री और बिहार के एक जाने–माने परिवार में ससुराल के जरिए बने अहम संबंधों के चलते उन्हें अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी मिल सकती थी। इसके लिए उनसे कहा भी जा सकता था। उस वक्त उन्हें पैसे की जरूरत भी थी। उन दिनों वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में समाज विज्ञान विभाग खोलने की सोच रहे थे। लेकिन उनके लिए इससे कहीं ज्यादा आसान काम था आजादी के आन्दोलन में जुट जाना और इसका मतलब था, कांग्रेस में शामिल होना। विचारों से मार्क्सवादी होने के बावजूद उन्हें लगता था कि गांधी जी की अगुवाई वाली कांग्रेस को जनता का व्यापक समर्थन प्राप्त है और वहीं देश को आजादी दिला सकती है।"[7]

भारत लौटने के बाद जे.पी. ने जिस पहली राजनीतिक सभा में भाग लिया वह कांग्रेस के तत्वावधान में मुंगेर में आयोजित हुई थी। माता–पिता से मिलकर जे.पी. गाँधी के वर्धा आश्रम पहुँच गए। जयप्रकाश के विदेश प्रवास के काल में प्रभावती गांधी जी के आश्रम में ही रही थीं। वर्धा आश्रम में ही उनकी मुलाकात पंडित जवाहर लाल नेहरू से हुई। दोनों ने देश की वर्तमान हालत पर विस्तार से चर्चा की। उस वर्ष नेहरू जी कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में शामिल होने के लिए जयप्रकाश, प्रभावती और जवाहर लाल नेहरू वर्धा से रवाना हुए।'[8] यात्रा के दौरान ही नेहरू जी ने कांग्रेस के श्रम प्रकोष्ठ की जिम्मेदारी संभालने का जे.पी. से आग्रह किया जिसको जयप्रकाश जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। 1930 में जयप्रकाश कांग्रेस श्रम प्रकोष्ठ का कामकाज करने इलाहाबाद आ गए। उन्होने कांग्रेस और ट्रेड यूनियनों के बीच बेहतर तालमेल बढ़ाये। उन्होंने सन् 1930 के 'सत्याग्रह आन्दोलन का इतिहास' भी लिखा जो दुर्भाग्यवश प्रकाशित नहीं हो पाया।'[9] जे.पी. ने 11 जनवरी 1930 को महात्मा गांधी को एक पत्र लिखा, 'आपके सविनय अवज्ञा आन्दोलन के

उनकी गिरफ्तारी पर अंग्रेजी समाचार पत्र 'फ्री प्रेस जर्नल' ने लिखा, "कांग्रेस ब्रेन अरेस्टेड"।[15] जे.पी. की गिरफ्तारी को राजाजी ने मद्रास उच्च न्यायालय में इस आधार पर चुनौती दी कि उनकी गिरफ्तारी का आदेश बम्बई में जिस अध्यादेश के अन्तर्गत निकाला गया था, वह मद्रास में लागू नहीं था, किन्तु उच्च न्यायालय ने उनकी गिरफ्तारी को बैध ठहराया।'[16] नासिक जेल में उनकी मुलाकात मीनू मसानी, अच्यूत पटवर्धन, नाना साहब, गोरे, अशोक मेहता, एम.एल. दाँतवाला जैसे जोशीले युवा क्रान्तिकारियों से हुई। जे.पी. जेल गए उन्होंने खुद को टटोला तो पाया कि वह जिस पथ पर चल रहे हैं, उसके बहुत सारे पथिक आजादी के मतवाले हैं। आजादी की लड़ाई लड़ते हुए जेल जाना यह जे.पी. का पहला अनुभव था। इस बारे में जे.पी. कहते है, 'बड़ा एक आत्मसंतोष था। यानि वह सारा जो इथोस (सामान्य प्रकृति) था, नेशनल मूवमेंट का, गाँधी के नेतृत्व को उससे एक ऐसा लोक मानस बना था कि देश के लिए 'सफर' करने से और अपनी सफरिंग से ही स्वराज्य की प्राप्ति होगी, देस में शक्ति बनेगी। तो शायद वह एक प्रकार का यज्ञ ही था। जिसमें भाग लेने का या आहुति देने का मौका मिला था। तो बहुत स्फूर्ति हमको मिली उससे। इस प्रकार बहुत बड़ा एक आत्मसंतोष रहा।'[17]

1934 में जयप्रकाश जेल से छूटने के पश्चात् 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' गठित की ताकि कांग्रेस समाजवादी कार्यक्रमों को अपनाए। 18 फरवरी, 1940 में उन्होने जमशेदपुर (बिहार) में भाषण देते हुए चार बातें बताई[18] =

1. युद्ध की परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए हम भारत से ब्रितानी शोषण का अंत करने के लिए अंग्रेजी सरकार को उखाड़ फेंके।
2. कर व मालगुजारी देना बंद करें।
3. अपनी सरकार स्थापित करें और ब्रितानी प्रशासन का वहिष्कार करें।
4. आम हड़ताले आयोजित करें तथा युद्ध में मदद के लिए लोहा भेजने से टाटा आयरन एंड स्टील कम्पनी को रोकें।

इस भाषण की वजह से जे.पी. को 9 माह की जेल हुई। उनके ऊपर यह आरोप लगा कि "उन्होंने अपने भाषण में लोगों को भड़काया था कि वे युद्ध से फायदा उठाए, अंग्रेजों द्वारा भारतीयों का शोषण रोकें, सरकारी कर्ज और राजस्व को अदा न करें, अपनी कचहरी, अपना थाना तथा अपना शासन स्थापित करें, ब्रिटिश प्रशासन का बहिष्कार करें, रेलवे तथा कचहरी में आम हड़ताल कराकर शासन का अधिकार स्वयं कायम करें, जर्मनी के युद्ध में किसी तरह की मदद तथा सहयोग सरकार को न दें तथा युद्ध में टाटा आयरन तथा स्टील कम्पनी को जो एशिया की सबसे बड़ी स्टील कम्पनी है, भेजे जाने वाले लोहे पर रोक लगाएं।[19] 1940 में रामगढ़ में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें जें.पी. की गिरफ्तारी की निंदा की गयी। 14 मार्च, 1940 को समस्त बिहार में 'जयप्रकाश

नारायण दिवस' मनाया गया। रामगढ़ में इस दिवस के अवसर पर लोगों को संबोधित करते हुए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा, 'जब कांग्रेस ने सत्ता संभाली तब यह समझा गया कि वह स्वराज्य प्राप्त कर लेगी। लेकिन इस तरह की घटना बताती है कि हमारी मंजिल अभी काफी दूर है। जयप्रकाश नारायण को गिरफ्तार करने की सरकारी नीति स्वस्थ नहीं है। उन्हें गिरफ्तार करके सरकार ने अच्छा नहीं किया है, क्योंकि अधिकांश कांग्रेसी नेताओं को इससे क्षोभ हुआ है।'[20]

जे.पी. को पहले हजारीबाग जेल फिर देवली डिटेंसन कैंप में रखा गया। जे.पी. ने इस जेल की दुर्व्यवस्था के खिलाफ 31 दिनों का भूख हड़ताल किया तो उन्हें पुनः हजारीबाग जेल भेज दिया गया। 8 अगस्त, 1942 को कांग्रेस ने भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पास किया और जे. पी. 9 अगस्त, 1942 को जेल से भाग गए। 29 दिसम्बर, 1942 को कांग्रेस की भूमिगत सभा हुई। इस सभा में जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, युगल किशोर, देवदास गांधी, अच्युत पटवर्धन, व वी.पी. सिन्हा जैसे महत्त्वपूर्ण नेता शामिल थे। जे.पी. ने पूरे देश का भ्रमण किया और कांग्रेसजनों से आग्रह किया कि वे विद्यार्थियों, युवाओं को पत्र लिखे। अगस्त क्रान्ति काल मे उन्होने 'आजादी के सैनिकों के नाम' की कुछ चिट्ठियाँ गुप्त रूप से प्रकाशित की। यह चिट्ठी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए लिखी गयी थी जिसमें उन्होने कहा था, 'आपने हमें बड़ी–बड़ी आशाएँ दिखाई है। इन आशाओं को पूरा करना आपही का काम है। याद रखिए संसार भर में आज नौजवान अपना हृदय रक्त अच्छे या बुरे उद्देश्यों के लिए प्रचुरता से उड़ेल रहे हैं। चालीस करोड़ मनुष्यों की आजादी से बढ़कर राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय, नैतिक या भौतिक दृष्टि से कोई दूसरा महान और पवित्र उद्देश्य नहीं हो सकता। मानवता के पंचमांश की स्वाधीनता का योद्धा बनकर आप अपने को आजादी, शांति और उन्नति की अंतर्राष्ट्रीय सेना के अग्रसेनानी सिद्ध करेंगे।

इस काल मे लड़ाई लड़ने का नया ट्रेंड आ गया था– गुरिल्ला युद्ध, छापामार युद्ध। जे. पी. ने भी अपने सहयोगियों के साथ मिलकर 'आजाद दस्ता' नामक संगठन गठित किया। 'आजाद दस्ता' पुस्तिकाओं में जे.पी. ने अपने उद्देश्य व साधनों को बताते हुए कहा," तोड़फोड़ गुलाम और पीड़ित जनता का एक अमोघ अस्त्र है, जिसके द्वारा वह अपने शासकों से लड़ती आई है। जनता की गुलाम बनाये रखने और उसे चूसने–दूहने के लिए जिन साधनों का निर्माण शासकों ने कर रखा है। उसका संहार करना, उनके कलयुगों को चकनाचूर करना, यातायात के साधनों को बेकार कर देना, इमारतों और भंडारों को भस्मीभूत कर देना–ये सब काम तोड़फोड़ के अंदर आते है। जे.पी. ने अंततः नेपाल को 'आजाद दस्ता' का केन्द्र बनाने का निर्णय लिया। कोसी–नदी के कछार में स्थित 'बकरी के टापू' पर जे.पी. के लिए घास–फूस की मड़ैया तैयार की गयी। कुएं बनाये गये, बाहर काम

करने के लिए दो घोड़े खरीदे गये, बैलगाड़ी भी खरीदी गयी। डाकखाना और स्टेशन से अखबार लाने का प्रबंध किया गया। जहाँ जयप्रकाश का घर बनाया गया उससे कुछ दूर पर आजाद दस्ता का बिहार प्रान्तीय दफ्तर बनवाया गया। दो हरकारे रखे गये जो जयप्रकाश और प्रान्तीय दफ्तर मे सम्पर्क बनाये रखें। जयप्रकाश के घर से कुछ दूर सामने एक पहाड़ था। विचार किया गया कि वहीं रेडियो स्टेशन बनाया जाय। उसके लिए ट्रांसमीटर और बैटरी लाने का प्रबंध किया गया।[21] ब्रिटिश सैनिकों ने 21 मई, 1943 को जे.पी. के साथ–साथ राममनोहर लोहिया, श्यामनंदन सिंह, बैद्यनाथ झा तथा कार्तिक प्रसाद सिंह को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने 'आजाद दस्ता' के दफ्तर पर छापा मारकर बम बनाने से संबंधित साहित्य, कुछ टॉमी गन, 355 बेल्वी रिवाल्वर तथा अन्य अस्त्र–शस्त्र बरामद किया।'[22] जे.पी. और उनके साथियों को गिरफ्तार कर जिस पुलिस चौकी में रखा गया उस पर आजाद दस्ते के सेनानियों ने धावा बोलकर सबको छुड़ा लिया। इसके बाद जे.पी. कुछ दिन भूमिगत रहे फिर सिंगापुर जाकर सुभाषचन्द्र बोस के आजाद हिन्द फौज से सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश की लेकिन कामयाब नहीं रहे।[23] 30 जुलाई, 1943 को गुलाबचन्द्र गुप्त की मदद से आजाद दस्ता के लिए धन इकट्ठा करने मुज्जफरपुर गये।[24] 12 सितम्बर, 1943 को पंजाब से उन्हें गिरफ्तार किया गया और लाहौर जेल में लाकर रखा गया फिर उन्हें आगरा जेल स्थांतरित कर दिया गया। बाद में 11 अप्रैल, 1946 को उनको जेल से रिहा कर दिया गया। ऐसे ही स्वतंत्रता की वेदी पर स्वयं को बलिदान करने वाले मातृभूमि के सपूतों के कर्मफल से देश को 15 अगस्त, 1947 को आजादी मिली।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि जे.पी. का सम्पूर्ण जीवन ही देश को, दीन दुखियों, किसानों,मजदूरों को समर्पित रहा। उनका विचार भी समाज की ज्वलंत समस्या से जुड़ा है। उनका विचार व व्यवहार सत्य और न्याय की कसौटी पर खरा है। उनमें एक तरफ जहाँ गांधीवादी अहिंसा है वहीं स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हिंसा से गुरेज भी नहीं है। मानवीय आधार पर देखें तो उनकी नजर में मनुष्य ही सबसे महत्त्वपूर्ण है और मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। आजादी के बाद भी वे समाज सेवा को तत्पर रहे तभी तो लोकनायक कहलाए। मरणोपरान्त देश ने उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया।

सन्दर्भ :

1 बी.एम. शर्मा व अन्य, 'भारतीय राजनीतिक विचारक', रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2019, पृ. 387

2 सुधांशु रंजन, 'जयप्रकाश नारायण', नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, 2000, पृ. 184

3 कांग्रेस सोशलिस्ट, 26 दिसम्बर, 1936 एवं कुमार प्रशांत, 'शोध को मंजिलें', जयप्रकाश अमृत कोश, सेवाग्राम, वर्धा, 1992, पृ. 68
4 भारत सरकार के गृह सचिव का पत्र बिहार सरकार के न्यायिक सचिव को, शिमला, सितम्बर, 1930 एवं अजीत भट्टाचार्य, 'जयप्रकाश नारायण : ए पोलिटिकल बायोग्राफी', रूपा, नई दिल्ली, 1971
5 विद्युत चक्रवर्ती, राजेन्द्र पाण्डेय, 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतनः विचार व संदर्भ', सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 119
6 वी.एम. शर्मा व अन्य, वही, पृ. 388
7 अजीत भट्टाचार्य, वही, पृ. 70
8 दीनानाथ वर्मा, 'आधुनिक भारत', ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000, पृ. 335
9 अनिल सिन्हा, 'जयप्रकाश–संक्षिप्त जीवन वृत्त', 1992, पृ. 43
10 कुमार प्रशांत, वही, पृ. 12
11 सुधांशु रंजन, वही, पृ. 31
12 वही, पृ. 32
13 अजीत भट्टाचार्य वही, पृ. 74
14 सुधांशु रंजन, वही, पृ. 33
15 अजीत भट्टाचार्य, वही, पृ. 75
16 सुधांशु रंजन, वही, पृ. 34
17 कांति शाह, 'जय प्रकाश की जीवन यात्रा', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, 2002, पृ. 38
18 कुमार प्रशांत, वही, पृ. 76
19 अजीत भट्टाचार्य, वही, पृ. 28–29
20 शंकर घोष, 'लीडर्स ऑफ मार्डन इंडिया', नई दिल्ली, 1980, पृ. 376
21 मुनीश्वर राय 'मुनीश', 'बज्जिकांचल का स्वतंत्रतता संग्राम', अभिधा प्रकाशन, 2005, पृ. 132–133
22 इंडियन नेशन, 18 अक्टूबर, 1941
23 रामनंदन, मिश्र, 'संस्मरण', लहेरियासराय, 1981, पृ. 58
24 अरूण भूयां, दि क्वीट इंडिया मूवमेंट, पृ. 112

***